# भूमिका

यह डिजिटल युग है। यहां सब कुछ बाईनरी (01) फॉर्म में है। संस्कृति, विचार, तकनीकी और यहां तक की हमारा ज्ञान भी डिजिटल है। हम डिजिटल दुनिया में रहने के अभ्यस्त हो चुके हैं। यही सही लगता है। हम इसके आस-पास ही रहना चाहते हैं।

डिजिटल दुनिया ने अपना साम्राज्य कायम किया है। टेलीविजन उसका एक हिस्सा है। यह दुनिया में माध्यम साम्राज्यवाद का सबसे मजबूत स्तंभ है। यह दुनिया का राजनीतिक एजेंडा तय करने लगा है। आज मीडिया के हर कवरेज के पीछे एक मंशा है। एक नया यथार्थ है। वह यथार्थ तकनीकी से निर्मित यथार्थ है। यह वर्चुअल भी है।

वर्चुअल रियलिटी वस्तुतः कायिक जगत को पेश करती है। यह कला के समान तालमेल बिठाने वाला, सपने की तरह असीमित और नुकसान नहीं पहुंचाने वाली है। अब यह कायिक जगत को प्रस्तुत करने वाले माध्यम के रूप में कम इस्तेमाल हो रहा है। टेलीविजन में इसका कुछ सालों से अतिरिक्त यथार्थ के सृजन में इस्तेमाल होने लगा है। इसने नई संभावनाओं का द्वार खोला है। यह अभी अपने शुरूआती दौर में है।

वर्चुअल रियलिटी किसी को प्रतीक और उपमा के रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें प्रवाह होता है। वर्चुअल की प्रस्तुति में नाटकीयता होती है। इसका संदेश कोड में होता है। इसमें स्पीड होता है। इसमें सब कुछ प्रतीकात्मक होता है।

टेलीविजन के माध्यम से जब हम वर्चुअल रियलिटी को पेश करते हैं तो व्यक्ति का निजी यथार्थ गायब हो जाता है। मीडिया जनित यथार्थ, यथार्थ लगने लगता है। यह हमारे विवेक को कमजोर, चकित, मौन और पंगु बनाता है। यह अपनी शर्तें थोपती है और गायब हो जाती है।

मीडिया की प्रस्तुतियां तकनीकी यथार्थ की देन होती हैं। इनमें बेचैनी, प्रेरणा और परिवर्तन की क्षमता नहीं होती। ये महज प्रस्तुतियां होती हैं। जल्दी आती हैं और चली जाती हैं। यह मनोरंजन करती हैं। आनंद देती हैं। इसकी प्रस्तुतियों से बने यथार्थ का परिणाम टीवी प्रस्तुतियों के बाहर होता है।